१.२.१ संस्थान द्वारा प्रस्तावित सभी विभिन्न पाठ्यक्रमों में (वैज्ञानिक-तकनीकी-साहित्य संयुक्त शास्त्री बी.एस.सी.आदि पारंपरिक उपाधियों में योग शास्त्र का प्राचीन-आधुनिक गणित / अर्थशास्त्र / प्रबन्ध शास्त्र /कानून शास्त्र / कंप्यूटर विज्ञान / आयुर्वेद सिद्धांत (दर्शन) / कृषि पाराशर और वृक्ष आयुर्वेद के समायोजन द्वारा शुरू किए गए नवीन पाठ्यक्रम और इसके द्वारा उभरते विषयों में पाठ्यक्रम / संस्कृत आश्रित पाठ्यक्रम) अभिनव पाठ्यक्रम।

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय ने समस्त शास्त्री (स्नातक) एवं आचार्य (स्नातकोत्तर) स्तर पर प्राचीनशास्त्रीय विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों को भी अत्यन्त वैज्ञानिक व अनुपम रीति से समाहित किया गया है। दर्शन,योगतन्त्र आदि विषयों के पाठ्यक्रमों में श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग की अवधारणा तथा पातंजल योगदर्शन, योगसारसंग्रह आदि पाठ्यांशों में योग के विवध आयामों का अध्यापन कराया जाता है । योग सूत्र को सांख्य योग पाठ्यक्रम में शास्त्रीस्तर पर और आचार्यस्तर पर तुलनात्मकदर्शन में सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से अध्यापन कराया जाता है। योगविषय में शास्त्री ,आचार्य ,डिप्लोमा विविध कार्यक्रम उपलब्ध हैं । ऋग्वेद के पाठ्यांश का हिरण्यगर्भसूक्त यौगिकप्रक्रिया से सृष्टि की उत्पत्ति का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रतिबोधित करता है ।

- वेद वेदांगसंकाय के अंतर्गत ज्योतिष विषयक पाठ्यक्रम खगोलीय विषयों का अध्ययन और अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित करता है यथा वेधशाला के माध्यम से पाठ्यक्रम में निर्धारित सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि ग्रन्थ में वैज्ञानिक पद्धति से यन्त्रों के निर्माण एवं प्रयोग का बोध कराता है । शास्त्री प्रथम वर्ष में ज्योतिष सिद्धांत के चतुर्थ प्रश्नपत्र में निर्धारित सूर्यसिद्धान्त ,गोलपरिभाषा तथा द्वितीय वर्ष में चापीयत्रिकोणमिति प्राचीन एवं आधुनिक भैतिकविज्ञान के समन्वय को दर्शाता है। सिद्धांत शिरोमणि में आकर्षण सिद्धांत को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है, उसी प्रकार आचार्य में निर्धारित आर्यभटीय ग्रन्थ में पृथ्वी के घूर्णन के सिद्धांत को ग्रहगणना के क्रम में वैज्ञानिक रूप से संकेतित किया गया है, जिसका समायोजन आचार्य कक्षा और शास्त्री कक्षा के पाठ्यक्रम में किया गया है।
- गृह विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि के स्वतंत्र पाठ्यक्रम निर्धारित हैं । पारम्परिक विषयों में शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर वास्तुशास्त्र में प्राचीन नियमों के अनुसार तकनीकी दृष्टिकोण से नगरनिर्माण,गृहनिर्माण ,देवालय निर्माण तथा प्राकृतिक ऊर्जाओं के समावेशन के सभी पक्षों को बृहद्वास्तुमाला और समरांगणसूत्रधार में समझाया गया है, जो कि आचार्य स्तर पर अध्ययन के लिए निर्धारित है। शास्त्री के प्रथम वर्ष में निर्धारित अनिवार्य पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय विषयों में तथा कुमारसंभव, अभिज्ञानशाकुंतल आदि काव्यग्रन्थों में प्राकृतिक विचार के अवबोधन का समावेश किया गया है । पाठ्यक्रम में निर्धारित वराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्संहिता पर्यावरण, धातुकर्म और जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान , धातुविज्ञान, रत्नविज्ञान तथा प्रकृतिविज्ञान का कोषरूपग्रन्थ है।
- वेदनैरुक्तप्रक्रिया के अन्तर्गत आचार्यद्वितीयवर्ष में प्रथमप्रश्नपत्र में प्रायोगिक दृष्टि से गणितीय अनुप्रयोग हेतु शुल्बसूत्र का समावेश किया गया है । गणित के स्वतंत्र विषयक पाठ्यक्रम के साथ साथ शास्त्री में निर्धारित

भास्कराचार्यविरचित विश्वप्रसिद्ध गणितीय ग्रन्थ लीलावती, बीजगणित को पाठ्यक्रम में विन्यस्त हैं जिनमें अंकविन्यास से प्रारम्भ कर त्रैराशिकादि गणितीय नियमों का समावेश किया गया हैं साथ ही में अवकलन, समाकलन, त्रैराशिक, लघुरिक्थ, त्रिकोणमिति, ज्यामिति, दशमलव पद्धति का निवेश भी तथा आधुनिक गणित की दृष्टि से गतिविज्ञान एवं स्थिति विज्ञान के विषय भी पाठ्यांश में समाहित हैं । विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों के अनुसार छात्रों को गणित की विधि का ज्ञान प्रदान करने के साथ साथ ग्रहगणित कर विश्वस्तरीय दृक्सिद्धपंचाग का प्रकाशन भी करता है । गणित में अवकलन, समाकलन, गतिविज्ञान, भूभ्रमण, दीर्घवृत्त इत्यादि जैसे विषय आधुनिक गणित के विषय भी पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं ।

- प्राचीन राजशास्त्र अर्थशास्त्र शास्त्री पाठ्यक्रम में निर्धारित में कौटिलीय अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, दंडनीति और कामन्दकनीति आदि ग्रन्थ विधि पर केन्द्रित हैं। किस प्रकार के कर्म के लिए किस प्रकार की नीति है इसका निदर्शन करने के उद्देश्य से पुराण के पाठ्यक्रम में वाल्मिकीय रामायण और महाभारत ग्रन्थ हैं। धर्मशास्त्र में याज्ञवल्यस्मृति, मनुस्मृति और तुलनात्मक दर्शन में अर्थशास्त्र, विधिशास्त्र के पक्षों को इसी उद्देश्यों से समाहित किया गया है। पाठ्यक्रम में वास्तुशास्त्र के माध्यम से भैतिकप्रबंधन और श्रीमद्भगवद्गीताके माध्यम से जीवनप्रबन्धन की अवधारणा प्रतिफलित है । ज्योतिष के आचार्यपाठ्यक्रम में निर्धारित समरांगणसूत्रधार और बृहत् संहिता नगर प्रबंधन और मंदिर प्रबंधन जैसे विषयों का पल्लवन करते हैं ।
- वनस्पति विज्ञान पाठ्यक्रम में स्वतंत्रतया विद्यमान हैं । अर्थववेद का प्राणसूक्त, पृथ्वीसूक्त ऋग्वेद का औषधि सूक्त, उषा सूक्त में वनस्पतियों में देवत्व का बोध कराता है। बृहत् संहिता में दकार्गलाध्याय वृक्ष आयुर्वेद पर अध्याय, वायु परीक्षा और सद्यः वृष्टि की विशेषताएं पाठ्यक्रम में अनिवार्य हैं। इसी प्रकार से साहित्य पाठ्यक्रम के शास्त्री प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में अभिज्ञानशांकुन्तल, कुमारसम्भव और मेघदूत में पर्यावरण सम्बन्धित विषयों की अवधारण से छात्रों को अवगत कराया जाता है । ज्योतिष शास्त्र के आचार्य कक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित बृहत्संहिता में वास्तुशास्त्र , दकार्गल (भूमिगत जल), वृक्षायुर्वेद के विषय पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।
- ज्योतिष पाठ्यक्रम में आचार्य पाठ्यक्रम में निर्धारित बृहत्संहिता में आयुर्वेद के सिद्धांत तथा कृषिपाराशर के विषय सम्मिलित हैं। वृक्षायुर्वेदाध्याय, सस्यलक्षणाध्याय, वृष्टिलक्षणाध्याय वृष्टि के पूर्णज्ञान,फसलों की विशेषताओं,तेजी एवं मन्दी आयुर्वेद के पक्षों को समाहित करते हैं। वास्तुकला में बृहदवस्तुमाला और वास्तुरत्नाकर में पर किस प्रकार की भूमि ग्रह्य है? किस प्रकार कृषि कार्य करना है? इन नियमों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। भास्कर विरचित सिद्धांत शिरोमणि शास्त्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम में निर्धारित है, छात्रों को खगोलीय गणित, भौतिक और रासायनिक विज्ञान का बोधन प्रदान करता है। होरा स्कन्ध के पाठ्यक्रम में चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का भी निवेश किया गया है ।
- व्याकरण में भाषा सिद्धांतों के शिक्षण में भाषाविज्ञान का भी निवेश किया जाता है। संगणकीय अनुवाद पद्धति के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के वैज्ञानिक पहलुओं की चर्चा प्रदान कर अनुवाद और अन्य परियोजनाओं में छात्रों की प्रतिभा को मजबूत करने का भी प्रावधान है। शब्दकोशों और निरुक्तों के माध्यम से संस्कृत को

आधुनिक भाषाविज्ञान और संगणक के साथ प्रयोगात्मक रूप से कैसे एकीकृत किया जाए, इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। अष्टाध्यायी, अमरकोश और निरुक्त की शिक्षा में निहित संगणकीय पद्धति की अवधारणा का बोध कराया जाता है।

छात्र साहित्य पाठ्यक्रम में महाकाव्य,नाटक आदि आख्यानों का निवेश कर पाठ्यक्रम लोक कलाओं का भी पोषण करता है नाट्यमंचन द्वारा छात्रों में अभिनय कौशल विकसित करता है। कादंबरी किरातार्जुनीय, शिवराजविजय, मृच्छकटिक और शिशुपालवध जैसे ग्रन्थों के द्वारा समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मानव व्यवहार विज्ञान और प्रबंधन में दक्षता प्रदान की जाती है । विश्वविद्यालय शास्त्री आचार्य की उपाधि के साथ साथ B.Lib, B.Voc, M.Voc, B.ed जैसे समसामयिक कार्यक्रम, ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड, आंतरिक सज्जा, पत्रकारिता विषयक प्रमाणपत्रीय,संगीतादि डिप्लोमा के पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। अभिनव पाठ्यक्रमों के क्रम में विश्वविद्यालय के ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केंद्र द्वारा सरल मानक संस्कृत शिक्षण, कर्मकांड, वास्तु, ज्योतिष, योग, दर्शन और वेदांत आदि दस विषयों में त्रैमासिक, षाण्मासिक और वार्षिक पाठ्यक्रम स्वीकृत किए गए हैं। ऑनलाईन ३० कार्यक्रमों में सरल मानक संस्कृत के माध्यम से ६०० से अधिक अध्येता पंजीकृत हैं। आधुनिक ज्ञानप्राली का समावेश करते हुए हिंदू अध्ययन, एम.ए. योग पाठ्यक्रम भी नवीनतया प्रारंभ किए गए हैं। वर्तमान में भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र द्वारा पारंपरिक साहित्य ६४कलाओं पर शोध भी निर्धारित है। विश्वविद्यालय दीवार प्रबंधन और कार्य कुशलता पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गए हैं ।

1.2.1Q$_1$M संस्थया प्रस्तुतेषु सर्वेषु विविधायामवत्सु पाठ्यक्रमेषु (वैज्ञानिक-प्रौद्योगिक-साहित्यसमाश्रयेण शास्त्री/ बी.एस्.सी-प्रभृतिपारम्परिकाधुनिकोपाधिनाम्ना योगशास्त्रस्य प्राचीन-आधुनिकगणितयोः/ अर्थशास्त्रस्य/ प्रबन्धनशास्त्रस्य/ विधिशास्त्रस्य/ सङ्गणकीयविज्ञानस्य/ आयुर्वेदसिद्धान्तस्य (दर्शनस्य)/ कृषिपाराशरस्य/ वृक्षायुर्वेदस्य च सङ्घटनेन समारब्धाः नवीनपाठ्यक्रमाः तथा उदयमानविषयकपाठ्यक्रमाः/ संस्कृताश्रितपाठ्यक्रमाः) अभिनवपाठ्यक्रमाः।

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये सर्वेषु स्नातकस्तरीयेषु स्नातकोत्तरीयस्तरेषु च प्राचीनशास्त्रीयविषयैः सह आधुनिकविषयाणामपि सन्निवेशः कृतः विद्यते। तत्र भागद्वयं मुख्यतया विद्यते। एकत्र तु स्वतंत्रतया अर्वाचीनविषयाः मुख्यरूपेण स्वतंत्रविषयरूपेण सम्बद्धः पुनश्च केचन विषयाः ऐच्छिकताया समाविष्टाः। विशिष्य च संस्कृतशास्त्रीयग्रन्थेषु अन्तर्विषयिणीं पद्धतिमनुसृत्य आधुनिकविषयाणां समावेशः विद्यते ।

- शास्त्रिस्तरे वेदवेदांसंकायान्तर्गते ज्योतिषविषकपाठ्यक्रमे खगोलीयविषयाणामध्ययनाय अनुसन्धानाय च आधुनिकयन्त्रालयः अर्वाचीनपद्धत्या छात्रान् प्रेरयति तथैव प्रस्तरवेधशालायां एकादशयन्त्राणि वैज्ञनिकीं पद्धतिं सम्पोषयति। शास्त्रिप्रथमवर्षे सिद्धान्तज्यौतिषविषये चतुर्थप्रश्नपत्रे गोलपरिभाषा निर्धारिता विद्यते , द्वितीयवर्षे च पंचमपत्रे चापीयत्रिकोणमितिः प्राचीनाधुनिकगणितयो समन्वयं द्योतयति। ज्योतिषविषयस्य पाठ्यक्रमे सिद्धान्तशिरोमणौ आकर्षणसिद्धान्तःप्रतिपादितः वर्तते तथैव आर्यभटीये भूभ्रमणसिद्धान्तः वैज्ञानिकरीत्या संकेतितः अस्ति यस्य निवेशः आचार्यकक्षायाः शास्त्रिकक्षायाश्च पाठ्यक्रमे वरीवर्ति ।
- गृहविज्ञानम्, वनस्पतिविज्ञानम् प्रभृतयः विषयाः ज्योतिषविषयस्य आचार्यकक्षायाः पाठ्यक्रमे निर्धारिते बृहत्संहिताग्रंथे वर्तते। वास्तुशास्त्रे प्राचीननियमानुसारेण प्रौद्योगिकदृष्ट्या गृहस्य निमार्णविषये सर्वे पक्षाः बृहत्संहितायाम्, बृहद्वास्तुमालायां समरांगणसूत्रधारे च प्रतिपादितास्सन्ति यस्याध्ययनं आचार्यस्तरे विधीयते । शास्त्रिप्रथमवर्षे निर्धारिते अनिवार्यपाठ्यक्रमे कुमारसम्भवे अभिज्ञानशाकुन्तले च पर्यावरणसम्बन्धिनो विषयाः प्राकृतिकचिन्तनसामग्रयश्च गुम्फिताः सन्ति। वराहमिहिररचिता बृहत्संहिता पर्यावरण-धातु-जीवविज्ञाननां कोषरूपा विद्यते।
- शास्त्रिस्तरे आचार्यस्तरे च सांख्ययोगपाठ्यक्रमे तुलनात्मकदर्शने च योगसूत्रम् सैद्धान्तिकतया प्रायोगिकदृष्ट्या च पाठ्यते । योगविज्ञानस्य कृते श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थः अपि पाठ्यक्रमे निर्धारिता वर्तते यत्र भक्तिकर्मज्ञानयोगाानां अध्यापनं छात्राणां कृते विधीयते । योगपाठ्यक्रमः ऑनलाइन केन्द्र पक्षतः योगविषक डिप्लोमा प्रदीयते।
- ज्योतिषीयपाठ्यक्रमे लीलावती-बीजगणित-रेखागणित-ज्यामिति-त्रिकोणमिति-भाभ्रमलघुरिक्थविषयाणां अध्ययनं विधीयते तत्र आधुनिकप्राचीनगणितयोः समन्वयः पाठ्यक्रमे वर्तते। पाठ्यक्रमे निर्धारितग्रन्थानुसारं सूर्यसिद्धान्तदृशा ग्रहगणितं विधाय पंचागमपि विश्वविद्यालयः प्रकाशयति गणितपद्धतिं च छात्रान् अवबोधयति । अवकलन-समाकलन-गतिविज्ञान-भूभ्रमण-दीर्घवृत्तप्रभृतयः विषयाः ज्यातिषीयपाठ्यक्रमे किं च स्वतन्त्रतया गणितविषयपाठ्यक्रमेपि निर्धारितास्सन्ति ।

- वनस्पतिविज्ञानपाठ्यक्रमे-वृक्षवनस्पतिविषयानां निवेशः कृतः विद्यते। बृहत्संहितायाम् दकार्गलाध्यायः,वृक्षायुर्वेदाध्यायः,पवनपरीक्षा,सद्योवृष्टिलक्षणमिति विषयाः पाठ्यक्रमे अनिवार्यतया विद्यन्त एव तथैव साहित्यपाठ्यक्रमे शास्त्रिद्वितीयवर्षे कुमारसम्भवम् मेघदूतं च पर्यावरणविषयान् सूचयतः।
- श्रीमद्भगवद्गीता पाठ्यक्रमे बहुषु स्थलेषु निर्धारिता वर्तते। तत्र पाठ्यक्रमे निर्धारिते वास्तुशास्त्रे प्रबन्धनशास्त्रस्य जीवनदर्शनस्य च अवधारणा विद्यते। समरांगणसूत्रधारे बृहत्संहितायां च नगरप्रबन्धनम्, देवालयप्रबन्धनम् इत्यादयः विषयाः समासीकृतास्सन्ति । स च ग्रन्थः ज्योतिषस्य पाठ्यक्रमे निर्धारितः विद्यते ।
- प्राचीनराजशास्त्र -अर्थशास्त्र पाठ्यक्रमे कौटलीयार्थशास्त्रम, शुक्रनीतिः, दण्डनीतिः, कामन्दकनीतिः इति ग्रन्थाः विधिविषये प्रबोधयन्ति । पुराणपाठ्यक्रमे वाल्मीकिरामायणम् महाभारतं च एतद्विषये महत्त्वपूर्णं विद्यते । धर्मशास्त्रे याज्ञवल्वयस्मृतेः व्यवहारमयूखे मनुस्मृतौ तुलनात्मकधर्मदर्शने च पाठ्यक्रमे अर्थशास्त्रविधिशास्त्रदीनां निवेशः वर्तते।
- ज्योतिषपाठ्यक्रमे आचार्ये बृहत्संहितायां आयुर्वेदसिद्धांताः कृषिपाराशरस्य विषयाश्च समाहिताः सन्ति। तत्र वृक्षायुर्वेदाध्यायः, सस्यलक्षणाध्यायः, दकार्गलाध्यायश्च आयुर्वेदविषयकं पक्षं परिपोषयन्ति । वास्तुशास्त्रे कीदृग्भूमौ कया रीत्या कृषिकर्मकर्तव्यमिति धिया नियमाः बृहद्वास्तुमालायां वास्तुरत्नाकरे च आचार्यस्तरे पाठ्यक्रमे निवेशिताः सन्ति। शास्त्रिस्तरे पाठ्यक्रमे निर्धारिता भास्करप्रणीता सिद्धान्तशिरोमणिः छात्रान् खगोलीयं गणितं भौतिकं रासायनिकञ्च विज्ञानं बोधयति। होरास्कन्धे च चिकित्सा-मनोविज्ञानपक्षाणामालम्बनं पाठ्यक्रमे कृतं विद्यते। वैदिकविषयाणां पाठ्यक्रमे च संहितादिग्रन्थेषु मूलरूपेण वैदिकविज्ञानं बोध्यते तथैव आरण्यकगृह्यसूत्रादिग्रन्थेषु मानवव्यवहारशास्त्रमभिलक्ष्य सर्वेऽपि विषयाः सन्निविष्टाः सन्ति।
- व्याकरणविषये भाषाविषयकाः सिद्धान्ताः पाठ्यन्ते तत्र भाषाविज्ञानस्य निवेशः अपि कृतः वर्तते। अनुवादपद्धत्या च विविधानां भाषाणां वैज्ञानिकपक्षाणां स्परूपविमर्शनं विधाय अनुवादादिषु प्रकल्पेषु छात्राणां प्रतिभायाः दृढीकरणं पाठ्यक्रमेण विधीयते। कोश-निरूक्तादिमाध्यमेन आधुनिकभाषाविज्ञानेन संगणकेन च संस्कृतभाषायाः कथं प्रायोगिकदृष्टया समन्वयः

भवेदित्यपि पाठ्यचर्यायाः अनिवार्यविषयाः सन्ति। तत्र अष्टाध्यायी-अमरकोष-निरूक्तग्रन्थानां संगणकीयदृष्ट्या एव गणितीयरीत्या अध्यापनं विधीयते ।

- आधुनिकोपाधिवत् ग्रन्थालय-पत्रकारिता-राजशास्त्र-अर्थशास्त्रप्रभृतीनां स्वतंत्रतया पाठ्यक्रमानां निवेशोस्ति। दीनदयालउपाध्यायकौशलकेन्द्रपक्षतः B.VOC , M.VOC प्रभृतया पाठ्यक्रमा सन्ति।
- शिक्षाशास्त्रिविभागद्वारा B.ed पाठ्यक्रमाः, ग्रन्थालयसूचनाविज्ञानविभागतः B.Lib,M.Lib, - पत्रकारिताप्रभृतयः पाठ्यक्रमाः प्रचलिताः सन्ति। साहित्यसंस्कृतिसंकायतश्च संगीतडिप्लोमा उपाधयः प्रदीयन्ते।
- ऑनलाइनपाठ्यक्रमाः- दशसु विषयेषु ऑनलाइनसंस्कृतप्रशिक्षणकेन्द्रद्वारा त्रैमासिकाः, षाण्मासिकाः वार्षिकाश्च पाठ्यक्रमाः यथा सरलमानसंस्कृतशिक्षणम्, कर्मकाण्डः, वास्तु, ज्योतिषम्, योगः, दर्शनम्, वेदान्तः इत्येतेषु दशविषयाः स्वीकृताः सन्ति यत्र ३० कार्यक्रमाः सरलमानकसंस्कृतेन प्रचलिताः वर्तन्ते येन ८०० छात्राः लाभन्विताः सन्ति ।
- साहित्यशास्त्रे च पाठ्यक्रमे महाकाव्यदीनां माध्यमेन लोककलानां परिपोषणं पुनश्च नाटकादीनाभभिमञ्चनेन छात्रेषु अभिनयकौशल विकासः पाठ्यक्रमेन सम्पाद्यते। कादम्बरी-मृच्छकटिकम् – शिशुपालवधम् इति शास्त्रिकक्षायां निर्धारितैः पाठ्यक्रमांशैः समाजशास्त्र-राजनीतिशास्त्र- मानवव्यवहारशास्त्र-प्रबन्धनादिविषये च दक्षता छात्रेषु उपपाद्यते।
- आधुनिकविषयाणामसमायोजनेन विश्वविद्यालयद्वारा नूतनाः अभिनवाः पाठ्यक्रमाः हिन्दूअध्ययनम्, योगदर्शनं च प्रारब्धम। सम्प्रति भारतीयज्ञानपरम्पराकेन्द्रपक्षतः अपि पारम्परिकसाहित्य ६४कलानां विषये अनुसंधानं विधीयते। विश्वविद्यालयः देवालप्रबन्धनम्, कथादक्षता विषयकान् पाठ्यक्रमान् समारब्धुम् उद्यतोस्ति।